संस्थापक : स्व. श्री रामगोपाल माहेश्वरी
नवभारत
1934 से

मुंबई में पहली बार हृदय संबंधी गंभीर बीमारी से पीड़ति महिला का इलाज

७ घंटे ऑपरेशन के बाद मिला जीवनदान

भारत में अब तक ४ मरीजों का हो चुका है इलाज

• **मुंबई,** (सं). मल्टीपल एन्यूरिज्म ऑफ साइनस ऑफ वाल्सल्वा (एएसओवी) नामक एक हृदय संबंधी गंभीर बीमारी से पीड़ति महाराष्ट्र के जलगांव जिला की निवासी ३४ वर्षीय महिला का मुंबई स्थित लीलावती अस्पताल में सफलतापूर्वक इलाज किया गया. अस्पताल के कार्डियोवैस्कुलर सर्जन डॉ. पवन कुमार के नेतृत्व में कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. नितीन गोखले और कार्डियक एनेस्थेसियोलॉजिस्ट डॉ. नम्रता कोठारी ने सर्जरी की हैं. मुंबई में पहली बार यह सर्जरी की गई है. सीमा पाटील (३४) को सांस लेने में तकलीफ हो रही थी. बिगड़ती सेहत को देखकर परिवार वालों ने उन्हें एक स्थानीय अस्पताल में भर्ती कराया था. वैद्यकीय जांच में पता चला कि हृदय का इकोकार्डियोग्राम और सीटी स्कैन सहित अन्य वैद्यकीय जांच कराई गई. इसमें महिला को मल्टीपल एन्यूरिज्म ऑफ साइंस ऑफ वाल्सल्वा नामक गंभीर बीमारी का पता चला. आगे के इलाज के लिए डॉक्टर ने मरीज को लीलावती अस्पताल ले जाने की सलाह दी.

सर्जन डॉ. पवन कुमार ने बताया कि लीलावती अस्पताल में वैद्यकीय जांच में दो एन्यूरिज्म का निदान हुआ. . एक वाल्सल्वा के बाएं कोरोनरी साइनस में (४.५, ३.५, ३ सेमी माप और बाएं कोरोनरी धमनी को संकुचित करना) और दूसरा वाल्सल्वा के दाहिने कोरोनरी साइनस में एन्यूरिज्म (३.५, २.५, २.५ सेमी माप) था. इसके साथ ही उसकी महाधमनी वाल्व पूरी तरह से लीक हो रही थी. ऐसी स्थिति में तुरंत सर्जरी करना काफी जरूरी था. वाल्सल्वा के साइनस के एन्यूरिज्म (एएसओवी) यह दुर्लभ हृदय संबंधी बीमारी है, इसका प्रमाण सामान्य आबादी में ०.०९% और जन्मजात हृदय दोषों में ०.१%-३.५% हैं. एएसओवी मुख्य रूप से ७०% मामलों में आरसीएस से, २५% मामलों में गैर-कोरोनरी साइनस से और शायद ही कभी बाएं कोरोनरी साइनस से होता है. इस बीमारी के दुनियाभर में केवल १८ ऐसे मामले सामने आए हैं. भारत में ऐसे ६ मामले सामने आए हैं. जबकि ४ मरीजों का शल्य चिकित्सा द्वारा इलाज किया गया है. डॉ. कुमार ने कहा कि इस सर्जरी को ७ घंटे लगे. सर्जरी में बाएं कोरोनरी साइनस एन्यूरिज्म की मरम्मत की गई, जो बाएं कोरोनरी धमनी के निकटता के कारण एक बेहद चुनौतीपूर्ण प्रक्रिया थी, दाएं कोरोनरी साइनस एन्यूरिज्म को बंद करना और महाधमनी वाल्व को बदलना जरूरी था.